आपातकाल में सृजन फुलवारी

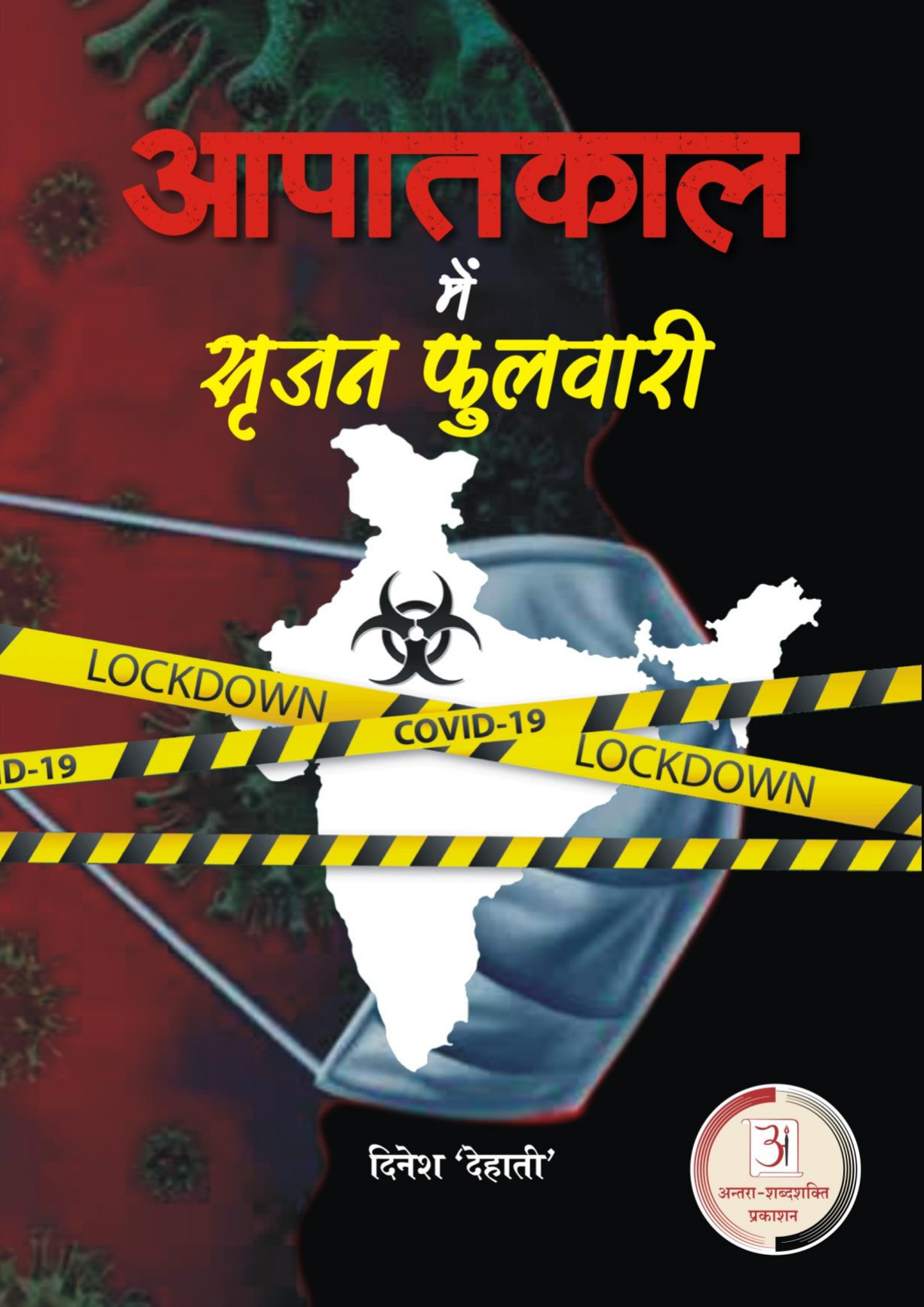

दिनेश 'देहाती'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

दिनेश कनौजे 'देहाती'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-104-6

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, दिनेश कनौजे 'देहाती'

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY DINESH KANAUJE 'DEHATI'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	राष्ट्र हित	6
2.	सीढ़ी	7
3.	कलम	8
4.	दीपक	9
5.	ईमानदारी- एक जीवन शैली	10
6.	हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है	11
7.	जीत जाएंगे हम	12
8.	बात तो बात है	13
9.	ठहरो	14
10.	विजेता	15
11.	प्रकृति को प्रणाम करो	16
12.	दीपदान	17
13.	हाँ! मांगने की आदत है मेरी	18
14.	जीने के लिए,..!	19
15.	उमंग	20
16.	सियासत नहीं सहयोग करो	21

राष्ट्र हित

स्वस्थ शरीर के लिए हम रोज योग करें,
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।

दया करूणा के नाम घमंड नहीं,
दान दक्षिणा दो तो कोई दंड नहीं,
समय ने बदल दी है परिभाषा सुनो,
संकट को जो न समझे वो संबंध नहीं,
आपदा का सामना मिल सब लोग करें,
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।

भूख ही है ये जो घर छुड़ाए,
भूख ही है जो सब बिसराए।
भूख ने भुला दिए रिस्ते नाते,
भूख की भयावहता क्या बताएं।
भूख का समाधान न कोई संजोग करे।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।

अंधेरों में भटकते कल के उजाले,
उनका भी मुंह चिढ़ाते हैं निवाले,
दरबदर है मुफलिसी में इंसान यारों,
बंद मस्जिद है और बंद शिवाले।
परीक्षा हेतु संयम का उपयोग करें।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।।

एक हाथ से दो दस से पाओगे,
आज नहीं दोगे तो कैसे पाओगे।
हमे कोई हमारा समझ सके जो
खो दोगे तो फिर कहां लाओगे।।
समाज कल्याण का अभी मनोयोग करें।।
राष्ट्र हित में हम मिलकर सहयोग करें।

सीढ़ी

चलो हम सब मिलकर एक सीढ़ी बनाते हैं।
सीढ़ी एक पारम्परिक साधन है
आप की अपेक्षित ऊंचाई को पाने का।
जहां तुम सहज नहीं जा सकते
वहां तक जाने का।
सीढ़ी आकार है
दो आधार स्तंभ और उनको जोड़ते पायदानों का।
२१ दिनों तक हम प्रति दिन एक
पायदान पर अपना योगदान देकर जीत जायेंगे
जंग "कोरोनावायरस" से,..
१. सोच- जीत की
२. समझ- अपनो से अंतर की
३. सहयोग- सबका लेकर
४. संयम- हर पल टूटते
५. संवाद- अपनों से
६. समन्वय- सरकार से
७. संयोजन- निरोधक सामग्री लेकर
८. सूत्रपात- समाजिक चेतना का कर
९. सद्भाव- पीड़ित बंधुओं से रख
१०.संवेदना- व्यथित व्यक्तियों को
११.संस्कार- सनातन धर्म से
१२.संहार- महामारी का
१३.संदेश- जन जागरण का
१४.सदाचार- स्वास्थ सेवकों से
१५.सात्त्विक- प्रवृत्ति के अनुपालन से
१६.समय- को महत्व देते हुए
१७.समाचार- भ्रम न फैलाएं
१८.सूत्रधार- हमारे अधिशासी हो
१९.शुभारंभ- नये युद्ध का
२०.समारोह- विभिषिका का
२१.समापन- धैर्य और एक प्रबुद्ध युद्धकर विजयी हो
शिखर पर आसीन हो
हूँकार भरें हम, सदी की सर्वश्रेष्ठ जीत पर।

कलम

आज मैं कलम
हाँ मैं! व्यथित हूँ,
अपने अतीत से वर्तमान तक
सृजित किए अनेक ग्रंथ।
कथा, कहानी, साहित्य, समाचार।
हाँ, नित नए परिशिष्ट पर
कभी आपत्ति नहीं थी किसी को,
क्योंकि
जब जिसने भी कलम उठाई
तो उकेरा साहस, सौहार्द,
संयम, संस्कृति, संस्कार और
सदाचार सहित सद्कार्य ही।
विघटन, विनाश,
विरोध और विद्रुप्ता को
स्थान नहीं दिया।
किंतु अब मैं स्वयं को
असुरक्षित असहाय पाती हूँ,
क्यों कि प्रतिस्पर्धा से
उपजी प्रतिद्वंदिता ने
मेरे मौलिकता पर ही
प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।
स्वार्थी लोगों हाथों में
नाचती अपने अस्तित्व को ही
तलाशती फिर रही हूँ मैं।
आज मैं कलम बहुत व्यथित हूँ।।

दीपक

दीपक तुम हो तम् को हरने वाले,
उल्लास जीवन का भरने वाले।

रुके कब हैं विपदा के रोकने से
प्रगति पथ पर सदा चलने वाले।

राष्ट्र हित में एक योगदान सबका हो,
बुझे न दीप शौर्य पथ पर जलने वाले।

डुबते को तिनके का सहारा बहुत,
बलिदानी नहीं किसी को खलने वाले।

जीवन मरण उसकी की मर्जी से है,
आस्था के प्राण नहीं निकलने वाले।

जो डरे तो आशाएं भी धूमिल होंगी,
ठहरते नहीं उम्मीद पर मचलने वाले।

वक्त तो उनका भी नहीं हूआ 'देहाती',
विकट विपदा में थे जो संभलने वाले।।

ईमानदारी- एक जीवन शैली

पथ प्रवर्तक संकीर्ण मानसिकता से परे,
लोभ मोह के समीकरण के छोड़ नखरे,
चरित्र निर्माण और सद्भावना का कर प्रचार,
मात्र ईमानदारी के साथ ही व्यवहार करें,
उन के लिए पल पल उत्सव और होली दीवाली है,
जिनके मन में ईमानदारी एक जीवन शैली है।।

पारदर्शिता सदा हर कार्य का आधार हो,
दैनिक लेन देन हो या वृहद व्यापार हो,
आप से लोगों में जागरूकता पैदा हो सदा,
करम आपका धर्म आपका ईमानी व्यवहार हो,
मन में हो संतोष तो सब भरा वरना सब खाली है,
हर्षित हैं वे जिनकी ईमानदारी एक जीवन शैली है।।

सावधान रहो तुम हरदम रिश्वत खोरों से,
न मिलाओ हाथ कार्य समय के चोरों से,
चापलूसी भी भ्रष्टाचार का हिस्सा है सुनो,
संबंधों के कारण कई पद भरे हैं नाकारों से,
कहीं आचरण में दाग लगा है कहीं चादर ही मैली है।
सफल हैं वे जिनकी ईमानदारी एक जीवन शैली है।।

हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है

वो भूल कर देश के हालात,
जो धोता नहीं है अपने हाथ,
ढंकता भी नहीं मुख अपना
सुनता नहीं है सबकी बात,

हर नसीहत को तराजू में तौलता है।
हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है।।

दुश्मन ही है सून सब अपने,
सुनते नहीं गर कहा जो सबने,
जिद करके लायेगा ज़लालत
बिखर जायेंगे जीवन के सपने।

गुस्से से अपना तो खून खौलता है।
हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है।।

संभलो सब संकट कि घड़ी है,
सारे संसार पर विपदा बड़ी है,
संयम ही समाधान है इसका
घर में रहो तुम्हे क्या हड़बड़ी है।

ठहर जा वो कोरोना नाग डोलता है।
हम बोलेगा तो बोलोगे कि बोलता है।

जीत जायेंगे हम

सूरज
स्वयं ही उदित नहीं होता।
अनंत अपेक्षाएं आमंत्रण देती है,
प्रकृति का प्रथम
आचमन प्रकाश से हो,

चांद भी यूँ ही नहीं
भटकता रात भर।
वो जागती आंखों का
सपना और बैचेन दिलों का
अपना बन कर चलता रहता है।

हवा को क्या पड़ी है
लहर-लहर लहराने की
वो मंद-मंद मुस्काती
पड़ी रहती मांद में,
किंतु सांसों में फंसी
जिंदगी की फांस को
सुलझाने उलझ जाती है,
झंझावातों से।
फिर हम क्यों है अनमने से?

आंखों में आशा,
जुबां पर जज्बात और कदमों में दम रख
हाथों में इरादो का अस्त्र उठाएं तैयार है,
हर स्थिति का सामना करने।

हमारे साथ है
वो सूरज, वो चांद, यह धरती और अंबर।
तो उठो
और
उल्हासित मन से आवाज दो।
जीत जायेंगे हम हर जंग,
सारे भारतीय हैं संग संग।।

बात तो बात है

इन दिनों हम सभी कवि घर पर है,
पर एक बड़ी चुनौती हर दर पर है।

हौसला बुलंद करने की बात तो होती है,
बड़ा सवाल तो कोरोना के डर पर है।

खुद को बचाने के लिए हम कैद ही है,
मगर हमारी नजर तो उस की नजर पर है।

सारे ढोंग ढकोसले झाड़ फूंक बेकार,
दुबक गए देख महामारी सफर पर है।

जिंदगी में हिम्मत के साथ डर भी जरूरी है,
सावधान मौत का साया हम पर है।

हम है सावधान और समाधान भी यही है,
आफत बड़ी हर गांव और शहर पर है।।

ठहरो

आज कैसा लग रहा है ठहराव,
चौराहे पर लगी लाल बत्ती
पर लानत भेजते रहे,
घर की देहरी में प्रवेश के समय दादी मां का टोकना कि
चरण पादुका से विमुक्त होकर आओ,
भोजन से पूर्व कि प्रार्थना
और
संयुक्त परिवार में
अपने क्रम की प्रतीक्षा बोझिल लगती थी।
ठहरना और वह भी अनचाहे,
मन को उद्वेलित करते भाव
धैर्य का सर्वथा अभाव।
प्रतिस्पर्धी युग दौड़ते हुए
ठहरना किसी त्रासदी से
कम प्रतीत नहीं होता।
लेकिन एक अनवरत जीवन यात्रा के लिए
परिस्थिति जन्य ठहरना पड़े
तो अपनी इच्छा से ठहर जाओ,
समझो, यह तुम्हारी परीक्षा है
जिसमें उत्तीर्ण होकर ही निरंतर रह सकते हो,
यदि आज अपनी मर्जी से नहीं घर पर ठहरे
तो अगला ठहराव आपकी मर्जी का नहीं होगा।
अगर यह ठहराव हमारे लिए है
तो ठहरना अच्छा है।

विजेता

एक कदम
दो कदम,
फिर कदम दर कदम,
ये कदमों की कदमताल नहीं
सफर की शुरुआत होती है।
कदमों को विश्वास मिल जाए
मन का तो तन भी
समर्पित हो जाता है।
सफलता यूँ ही नहीं मिलती-
सोने की तरह जलना पड़ता है,
लोहे की तरह गलना पड़ता है,
हीरे की तरह कटना पड़ता है,
झरनों की तरह बहना पड़ता है,
वक्त की दोधारी तलवार पर
जिम्मेदारियों का बोझ लेकर
निरंतर चलना पड़ता है।
और जो चलकर अपनी
मंजिल पा जाता है।
बस-- बस--
वही विजेता बन पाता है।।

प्रकृति को प्रणाम करो

जब रास्ते बहुत कठिन थे
तब जीवन बहुत सरल था,
अब रास्ते बहुत सरल है तो
जीवन बहुत कठीन हो गया।

तब इंसान हंसता मदमस्त
था तो रास्ते उदास थे।
अब रास्ते खिलखिला रहें हैं
तो इंसान उदास हो गया।।

भूख थी तो रोटियों की तलाश
ही मकसद था तब,
अब भूख ही नहीं लगती जब
रोटियों का इंतजाम हो गया।

हवा का रुख ना समझे तो
उड़ गए हवा जिधर ले गई।
कैद कर लिया फिजाओं को
ऐ रोशनी भी हमारी हो गई।

सुख के सपने संजोए बैठे
प्रकृति का विनाश कर गए,
उसने दिखाया अपना तांडव
हम एक 'विषाणु' से डर गए।

विकास के नाम पर तुम
देहाती चाहे जितने काम करो।
प्रकृति ही सर्व शक्तिमान है
सब मिलकर प्रणाम करो।।

दीपदान

दीप जलाने के आव्हान पर एक अनोखी बात थी।
राष्ट्र हित में एक-एक कुटिया भी महलों के साथ थी।।

तपती धूप को सहकर जिसने रचा घरौंदो का भाग्य।
उस अभागी कुटिया के हिस्से में तो अंधेरी रात थी।

आज को नया आधार दिया स्वयं निराधार रहकर।
श्रमिक तेरे श्रम और समर्पण की कुछ तो बिसात थी।

गांव से आकर शहरों को आकार देने वालों के लिए,
विपदा में नहीं जागी, इंसानियत या पत्थर की जात थी।

अंधेरों में भटकते स्वयं के अस्तित्व से अनभिज्ञ,
गर्व है सर्वहारा की सद्बुद्धि तो राष्ट्र के साथ थी।

हे राष्ट्रनायक संकट में सबको साथ लेकर चलने वाले,
बड़े आश्वस्त हो पर कुटिया को न लगे वो अनाथ थी।

हाँ! मांगने की आदत है मेरी

चंदा से शीतलता मांगी, सूरज से प्रकाश मांगा,
वृक्षों से छांव मांग ली, दोपहरी जब डर लगा।।

भूख ने भोजन मांगा, प्यास ने मांगा पानी।
दुःख ने सुख मांगा तो, सुख ने मांग ली परेशानी।
संस्कारों ने मांगा तो, जीवन साथी पाया।
सुखद संसार मांगा, गृहस्थी आगे बढ़ाया।

प्रेम मांगा मिला मुझे, साथ मांगा मिला मुझे।
पर मांगने से भी 'समय', नहीं मिल पाया कभी।
लम्हों को समेट कर, जिंदगी के सफ़र में,
जिया तो जरूर हूँ, सपने छोड़ अधर में।

कभी वो भी पाया मैंने, जो कभी मांगा ही नहीं,
वह भी मिल गया मुझे, जो कभी चाहा ही नहीं।
ईश्वर ने दिया तो खूब, सब समेट नहीं पाया,
जितनी औकात थी मेरी, उतना ही हिस्से आया।

दो हाथ दिए मन बड़ा, तन दो पांव पर खड़ा।
समझना कठीन अब, मैं ठहरा खाली घड़ा।
ईश्वर कृपा करना तुम, जीवन गरल पीना पड़े,
दया करना बस इतनी, 'दया' पर ना जीना पड़े।

दया के नाम पर हाथ, उठता है जिन जिनका,
स्वाभिमान छिन्न-भिन्न करते, अस्तित्व तिनका तिनका।
प्रभु ने सक्षम बनाया है, उस का मान-सम्मान करो।
सामाजिक दायित्व है, जीयो और जीने का आव्हान करो।

दान एक हाथ से दो, दुजे को भान न हो कभी
मन संतृप्त हो केवल, किंचित अभिमान न हो कभी।
दया कि कल्पना मात्र से, याचक स्वत: डर जाता है,
मृत्यु पूर्व ही वह प्राणी, आत्मग्लानि से मर जाता है।।

हां मांगता हूँ कबीर, संत संगत हो जाय,
मैं स्मरण करूं सदा और जग दूँ बताय।।
साईं इतना दीजिए, जा में कुटुंब समाय,
मैं भी भूखा न रहूँ, साधू न भूखा जाय।।

जीने के लिए,..!

जीने के लिए नहीं दौलत बेशुमार चाहिए,
जिंदगी में तो बस अपनों का प्यार चाहिए।।

सबका आशियाना बनाने वाले इंसान सून,
ठहरने के लिए खुद का भी घर-बार चाहिए।।

मुफलिसी मुंह उठाकर चलने तक नहीं देती,
कल की रोटी का कुछ तो आधार चाहिए।।

महामारी से कुछ सबक सीखा क्या तुमने,
बोलिए शहंशाह किसे मोटर-कार चाहिए।।

आसमां में घर बनाने की सोच है रहा जो,
उसे भी जिंदगी के चंद लम्हे उधार चाहिए।।

फासले भी अहमियत रखते हैं कभी-कभी,
बस दरमियानी हो दिलों में तो प्यार चाहिए।।

वो भी जिंदा है आना पाई कौड़ी के खर्चे पर,
जो कहता था रोज मुझे रुपए हजार चाहिए।।

दवा और दुआओं के साथ जिंदगी में आदमी के,
सामाजिक समझ और नैतिक व्यवहार चाहिए।।

वो भी भक्त बन भजन कर रहे हैं भगवान का,
कभी रोज जिन्हें करोड़ों का व्यापार चाहिए।।

जान है तो जहान है सीधी सी बात है 'देहाती',
"कोरोना वायरस" से मुक्त ये संसार चाहिए।।

उमंग

देश और दुनिया लड़ रही है कोरोना वायरस से जंग।
अनुशासित हो समर्थन हमारा व्यवस्था ना हो भंग।

लाकडाऊन हमको ही बचाने की एक कोशिश है दोस्तों,
हताशा छोड़ कर जीवन्त रहो मन में रखकर उमंग।।

नमस्कार का संस्कार अब वैश्विक व्यवहार बन गया है,
अंतर का मंतर अपनाएं पंडे पुजारी और मौलवी मंलग।।

सक्षम बनाया ईश्वर ने अक्षम का सहारा बन कर देखो,
भूखे को भोजन प्यासे को पानी बेघर का आवास प्रसंग।।

शिक्षा संस्कार और संस्कृति का बेहतरीन नजारा है,
दान दक्षिणा और दया के क्षेत्र में उदार है कोई नहीं तंग।।

सच्चे सिपाही और स्वास्थ कर्मियों के ऋणी है हम सभी,
महामारी से खबरदार करते जूझते खुद उस आपदा के संग।।

हम घर में ही सुरक्षित है सावधान करें नासमझ लोगों को,
प्रार्थना करें कि अहित ना हो से प्रभु हितकारियों के संग।।

सियासत नहीं सहयोग करो

हाय ये किस्मत के मारे मजबूरी में मजदूर।।
सारे बड़बोले चैनलों से अभागे तू रहा दूर।।

तेरी भूख को बनाकर तमाशा देख रहे,
तेरी तपती देह पर स्वार्थ की रोटी सेंक रहे।।

तेरी चर्चा से आज हर टीवी चैनल गरमाया है,
पर अभागे तू किसी एक में भी नहीं आया है।।

भगीरथ भी याद आ गए तेरे अथक प्रयासों से।
जलते तलवे शर्मिंदा हैं सियासी उपहासों से।।

रेल भाड़े पर भड़ास निकाली इसे विराम दो।
भीख मांगने से पहले उन हाथों को काम दो।।

महामारी से जूझ रहे देश में अजीब सी हताशा है,
सारी दुनिया नमन करती, यहां महज तमाशा है।।

कल को सहेजने आज से ही तैयारी जरूरी है,
धीरे धीरे ही सही सारे रास्ते खोलना जरूरी है।।

सियासत नहीं सहयोग से व्यवस्था को सख्त करें।
कोरोना के योद्धाओं का हम आभार व्यक्त करें।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

मानव संवेदनशील प्राणी है, उसकी नियमित जीवन शैली को प्रभावित करने वाली किसी भी घटना का प्रभाव उसके आचार विचार और व्यवहार पर पड़ता है।

वर्तमान में वैश्विक महामारी से यह व्यवधान अपने साथ संकट और शंकाओं का संग्रह लेकर आया है। आकस्मिक परिस्थिति से किसी भी प्राणी मानसिक रूप से अस्थिर होना संभव है किंतु सृजन शिल्पी, कवि, लेखक, समीक्षक पूर्ण रूप से दूरदर्शी एवं धैर्यवान होते हैं। इस आपातकाल में हम सब उत्साहित करती प्रतिक्रियाएं, रचनाएं एवं विचारों का संप्रेषण कर जन सामान्य को अवसाद जैसी विसंगतियों से दूर रखने का निरंतर प्रयास करते रहे हैं।

यहां अन्तरा शब्दशक्ति समूह की सक्रियता, नियमितता और अविरल प्रवाहमय गतिविधियों ने सभी मित्रों का उत्तम मनोभाव के सहयोग किया है। सृजनशीलता को उत्साहित करते हुए उन्हें समय को नये दृष्टिकोण से देखने, परखने का अवसर दिया है। अपनी सहज सरल और सहयोगी विचारधारा से संकट कि घड़ी में भी सुदृढ़ता प्रदान की है। डूबते को तिनके का सहारा ही काफी कि कहावत को चरितार्थ करते हुए डूबते की नैया पार लगाने का काम किया है।

साहित्य के संसार में होते कुछ अजूबे,
शब्द से तैरते कुछ, कुछ शब्दों संग डूबे।।

रचनाकार
दिनेश 'देहाती'
तिरोड़ी, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
Email- dineshkanoje19@gmail.com
Mobile - 9893578322, 7999623599

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-104-6
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/